श्री शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ॐकारा, स्वामी जय शिव ॐकारा,
ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा। ॐ जय शिव...

एकानन चतुरानन पंचानन राजे,
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे। ॐ जय शिव...

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे,
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे। ॐ जय शिव...

अक्षमाला बनमाला, रुंडमाला धारी,
चंदन मृगमद सोहे, भाले शशिधारी। ॐ जय शिव...

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघांबर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक प्रेतादिक संगे। ॐ जय शिव...

कर के मध्य कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता,
जग कर्ता संहर्ता, जग पालन कर्ता। ॐ जय शिव...

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर के मध्ये, तीनों ही एका। ॐ जय शिव...

त्रिगुण स्वामी जी की आरती, जो कोई जन गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे। ॐ जय शिव...